DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor
Deptt. of sanskrit,
S.R.A.P. college, Bara chakia

B.A. (Hons.), part — II
Subject — sanskrit
paper — IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (द्वितीयोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं०— ४

अनवरतधनुर्ज्यास्फालतक्रूरपूर्वं रविकिरणसहिष्णु स्वेदलेशैरभिन्नम्।
अपचितमपि गात्रं व्यायतत्वादलक्ष्यं गिरिचर इव नागः प्राणसारं बिभर्ति॥

अन्वयः

गिरिचरो नाग इव देवः अनवरतधनुर्ज्यास्फालतक्रूरपूर्वं रविकिरणसहिष्णु स्वेदलेशैः अभिन्नम् अपचितम् अपि व्यायतत्वात् अलक्ष्यं प्राणसारं गात्रं बिभर्ति।

अनुवाद

इनका तो मृगया के कारण बराबर धनुष को चढ़ाते रहने से पूर्ण व्यायाम हो जाने के कारण शरीर सुदृढ़ एवं कठोर हो गया है और सूर्य की प्रखर किरणों के सहन करने की क्षमता भी इनमें आ गयी है। इनको परिश्रम से तथा सूर्य के सन्ताप से भी पसीने नहीं आते हैं; इनका शरीर यद्यपि परिश्रम से कृश हो गया है, फिर गठा रहने के कारण कृशता प्रतीत नहीं हो रही है। अतः जिस प्रकार जंगली हाथी का शरीर कृश होते हुए बलिष्ठ और शक्तिशाली होता है वैसे ही महाराज का शरीर कृश होते हुए भी उत्साह सम्पन्न, सुदृढ़, परिश्रम सहिष्णु तथा सक्रियाशील है।

— o —

Scanned by TapScanner